— शिक्षण —

Date ....../....../......

Page No. ....

— Syllabus —

① शिक्षण क्या है?
② शिक्षण सूत्र
③ शिक्षण विधियाँ
④ सम्प्रेषण
⑤ सूक्ष्म शिक्षण

- शिक्षण को अंग्रेजी मे Teaching कहते है।
- शिक्षण एक द्विमार्गीय प्रक्रिया है जिसके द्वारा विचारो का आदान - प्रदान किया जाता है।

- शिक्षण का अर्थ है— पढाना, ज्ञान देना, शिक्षा देना।

- यह शिक्षक, शिक्षार्थी के उपस्थिति में सम्पन्न होने वाले अन्तःक्रिया है। एवं इस अन्तःक्रिया का माध्यम पाठ्यवस्तु है। जैसी पाठ्यवस्तु की प्रकृति होती है उसी प्रकार का शिक्षण विधि का चयन किया जाता है।

- वास्तव में शिक्षण किसी भी विषय - वस्तु का हो, उसकी कोई भी विषय - वस्तु हो, तथा वह किसी भी स्तर का हो उसका एक ही लक्ष्य होता है और वह है 'प्रभावशाली अधिगम विकसित करना'।

- यथार्थतः जब अधिगम प्रभावशाली या संतोषजनक होता है तभी शिक्षण की प्रक्रिया को प्रभावशाली माना जाता है।

⇒ रायबर्न के अनुसार — शिक्षा में तीन बिन्दु होते है—
① शिक्षक
② शिक्षार्थी
③ पाठ्यक्रम

शिक्षण इन तीनो में स्थापित किये जाने वाले सम्बन्ध है।

Teacher's Signature ....

Scanned with CamScanner

Date ...../...../.....

Page No. .....

क्लार्क के अनुसार — शिक्षक प्रक्रिया बालको के व्यवहारों में परिवर्तन लाने में, निर्मित व प्रदर्शित की गयी है।

विशेषता :-

1. शिक्षण निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
2. शिक्षण सामाजिक प्रक्रिया है।
3. शिक्षण सीखने व सिखाने दोनों की प्रक्रिया है।
4. शिक्षण पथ-प्रदर्शक व मार्गदर्शन दोनों है।
5. शिक्षण त्रिविमिय प्रक्रिया है।

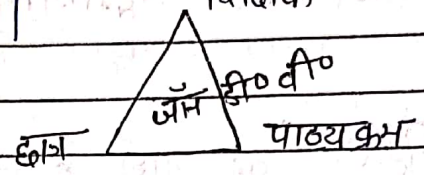

Qus:- कौन-सा कथन शिक्षण के सन्दर्भ में सही नही है —

1. शिक्षण एक अन्तःक्रियात्मक प्रक्रिया है।
2. शिक्षण एक त्रिमुखीय प्रक्रिया है।
3. शिक्षण एक प्रभाव निर्देशित प्रक्रिया है।
4. शिक्षण केवल कक्षा तक सिमित रहने वाली प्रक्रिया है।

शिक्षण के प्रकार :-

1. व्यवस्था के आधार पर —

औपचारिक	अनौपचारिक	निरौपचारिक
eg:- विद्यालय इसमे निश्चित स्थान निश्चित पाठ्यक्रम हो	eg:- आकस्मिक रूप से शिक्षा इसमें कुछ भी निश्चित न हो।	eg:- दूरस्थ शिक्षा इसमे दोनों के मध्य सह सम्बन्ध स्थापित हो।

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

Date ...../...../.....

Page No. .....

(2) स्तर के आधार पर शिक्षण :—

(i) स्मृति (प्राथमिक स्तर में) — (ii) बोध (माध्यमिक स्तर) — (iii) चिन्तन (उच्च शिक्षण स्तर)

(3) शासन व्यवस्था के आधार पर —

(i) सत्ता केन्द्रीत — इसमें केवल शिक्षक का ही वर्चस्व हो
As:— विद्यालय, महाविद्यालय, पहले गुरुकुल

(ii) प्रजातांत्रिक / लोकतांत्रिक शिक्षण :— शिक्षक, छात्र दोनों की सहभागिता

(iii) हस्तक्षेपरहित — इसमें बालकों के ऊपर छोड़ देते है। या करके सीखने का।

(4) क्रिया के आधार पर —

(i) प्रदर्शन शिक्षण — इसमें बालकों को कोई भी चीज दिखाकर पढ़ाया जाता है।

(2) व्याख्या शिक्षण / प्रस्तुतीकरण —

(3) करके सीखना —

⇒ कक्षा गतिविधि शिक्षण —

(1) विवरणात्मक शिक्षण।
(2) निदानात्मक ,,
(3) उपचारात्मक ,,

⇒ शिक्षण के चर :—

(1) स्वतन्त्र चर :—
(2) आश्रित चर।
(3) मध्यस्थ चर।

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

Date ...../...../.....

Page No. .....

शिक्षण की अवस्थायें :—

(i) शिक्षण से पूर्व की अवस्था — इसमें शिक्षक को छात्रों को पढ़ाना होता है उसको पहले से नियोजित/तैयारी करके आता है।

(ii) शिक्षण की अवस्था :— यह शिक्षण कार्य के दौरान की अवस्था होती है यह शिक्षक एवं छात्र के अन्तःक्रिया की अवस्था है। जो छात्र एवं शिक्षक के बीच वाद - संवाद होता है।

(iii) शिक्षण के बाद की अवस्था (शिक्षणोपरान्त) — इसमें छात्र का मूल्यांकन करते है कि शिक्षक द्वारा पढ़ाया गया पाठ समझ में आया या नहीं।

- शिक्षण सहायक - सामग्री —
शिक्षण सहायक सामग्री 3 प्रकार की होती है—
(1) दृश्य ।
(2) श्रव्य ।
(3) श्रव्य & दृश्य ।

- शिक्षण के उद्देश्य :—
शिक्षण के निम्न उद्देश्य होते है —
(1) बालक को एक अच्छा नागरिक बनाना।
(2) बालकों में क्रियाशील और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना।
(3) छात्रों को शिक्षण कार्य में रुचि पैदा करना।
(4) शिक्षण का उद्देश्य एक सम्पूर्ण मानव का निर्माण करना ताकि उसके अस्तित्व का प्रत्येक पक्ष पूर्णतः विकसित हो सके।

- शिक्षण का शिक्षा में योगदान :—
(1) शिक्षण नवीन अधिगम पर बल देता है।

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

Date ...../...../.....

Page No. .....

(2) शिक्षण से शिक्षा के अनेक प्रारूप विकसित होना।
(3) शिक्षण के द्वारा शैक्षिक लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया जाने लगा है।

शिक्षण विधि :-
विधि को अंग्रेजी भाषा में Method कहा जाता है। Method शब्द लैटिन भाषा के 'Mode' से बना है। जिसका अर्थ है 'माध्यम'।

- पाठ्य - वस्तु की प्रस्तुतिकरण के शैली को शिक्षण विधि कहा जाता है।

- शिक्षण विधि एक विशिष्ट परिस्थिति का द्योतक है। जिसमें एक प्रभावशील व्यक्ति अपने से कम अनुभवहीन या अपरिपक्व व्यक्ति या छात्र को बाह्य जगत के ज्ञान से परिपक्व कराता है।
- एक शिक्षक अपने किसी भी शिक्षार्थी को जिस भी विधि से अध्ययन कार्य करवाता है वह कार्य शिक्षण विधि कहलाता है।

— शिक्षण विधि के प्रकार —

(1) शिक्षक केन्द्रित (2) छात्र केन्द्रित (3) तकनीकी

Qus:- शिक्षण विधि मुख्य रूप से कितने प्रकार के होते है?
दो (शिक्षक, छात्र)

Qus:- शिक्षण विधि कितने प्रकार की होती है?
3 (शिक्षक, छात्र, तकनीकी)

(1) व्याख्यान विधि :— यह सबसे प्राचीन विधि है। इस विधि में अध्यापक सारी विषय - वस्तु को बच्चों के सामने प्रस्तुत करता है।

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

20 July 2021

Date ...../...../.....

Page No. .....

इसमें बच्चे केवल सुनते रहते है। और खुद नोट करते रहते थे इस विधि में यह जानना कठिन होता है कि छात्र किस सीमा तक शिक्षक द्वारा प्रदत्त ज्ञान को सीख सकते है।

गुण :- (1) इस विधि में प्रस्तुतीकरण पर ज्यादा बल दिया जाता है।
(2) इस विधि में समय व श्रम की बचत होती है।
(3) यह विधि उच्च कक्षाओं के लिए उपयोगी होता है।
(4) इस विधि के द्वारा कम समय में अधिक सूचनाये दी जाती है।
(5) यह विधि आदर्शवादी विचारधारा की देन है।
(6) यह मितव्ययी विधि है।

दोष :-
(1) इसमें छात्र कम सक्रिय रहते है।
यह विधि छोटे कक्षा के लिए उपयोगी नही है इसमें छात्र केवल श्रोता बना रहता है।

→ ऐतिहासिक विधि :- इसके प्रवर्तक जे० एस० ब्रूनर है। इस विधि से इतिहास पढ़ाने के लिए उपयोग किया जाता है।
इस विधि के अन्तर्गत किसी वस्तु, तथ्य अथवा प्रक्रिया का पता लगाया जाता है।

गुण :-
(1) यह छात्रों को खोजकर्त्ता बनाती है।
(2) यह सृजनात्मक चिन्तन के विकास में सहायक है।
(3) छात्र इसके माध्यम से नवीन ज्ञान की खोज करता है।

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

20 July 2021

Date ...../...../.....

Page No. .....

दोष :-

(1) यह विधि सभी विषयों एवं प्रकरणों पर लागू नहीं होती।
(2) यह विधि प्रतिभाशाली बालकों के लिए अधिक उपयोगी है।
(3) यह विधि में शिक्षण की गति काफी धीमी हो जाती है।

→ व्याख्यान प्रदर्शन विधि :-

व्याख्यान प्रदर्शन विधि में छात्र व शिक्षक दोनों सक्रिय रहते है। इसमें कक्षा में शिक्षक सैद्धान्तिक भाग का विवेचन करने के साथ इस विधि द्वारा उसका सत्यापन करता है।

शिक्षक पढ़ाते समय प्रयोग करता जाता है। और छात्र प्रयोग दर्शन का निरीक्षण करते हुए ज्ञान प्राप्त करते है। अतः छात्र इस प्रक्रिया में पूर्ण सक्रिय बने रहते है। तथा उन्हें निरीक्षण एवं तर्क - शक्ति की अपेक्षित प्रशिक्षण प्राप्त हो जाता है।

गुण :-

(1) इसमें समय कम लगता है।
(2) बालक स्वयं देखकर सीखते है।
(3) यह शिक्षण प्रभावशाली होता है।
(4) यह शिक्षण विधि छोटी कक्षा के लिए उपर्युक्त है।

दोष :-

(1) इस विधि में बालकों को स्वयं प्रयोग के अवसर नही मिलते।
(2) कुछ छात्र ठीक प्रकार से प्रयोग का निरीक्षण नहीं करते।

→ ट्युटोरियल या अनुवर्ग विधि :-

इस विधि में कक्षा को छोटे - 2 समूहों में बाँट लेते है। और छोटे - 2 समूहों में शिक्षक पहुँचकर इस समूह की समस्याओं की खोज करता है।

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

Date ..../......./.......

Page No. ....

और छात्र को उनके सही हल तक पहुँचाने में मदद करता है। यह छोटे बच्चों तथा प्रौढ़ों के पढ़ाई के लिए उपयुक्त है। इस विधि को तीन खण्डों में विभाजित किया गया है।

(1) निरीक्षण ट्यूटोरियल — शिक्षक के साथ छात्र व्यक्तिगत रूप से विचार - विमर्श तथा वार्तालाप करता है।

(2) सामूहिक ट्यूटोरियल — इसमें साधारण स्तर के छात्रों को विशिष्ट शिक्षण दिया जाता है।

(3) प्रयोगात्मक ट्यूटोरियल — प्रयोगशाला कार्य आदि का अध्ययन तथा उसका समाधान किया जाता है।

गुण :-

1) यह शिक्षण के सुधारात्मक पक्ष पर ध्यान देती है।

2) छात्र के पूर्व ज्ञान के आधार पर उसकी समस्याओं का सुलझाया जाता है।

दोष :-

1) शिक्षक कभी-2 कुछ विशेष छात्रों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित कर देते हैं। जबकि ट्यूटोरियल उस समूह के प्रत्येक छात्र के लिए होता है।

2) कुछ छात्र दूसरे छात्र को बोलने की बहुत कम अवसर देते हैं।

Imp अभिक्रमित अनुदेशन विधि / अभिक्रमित अधिगम विधि :— इस विधि के अन्तर्गत विषय - वस्तु को छोटे-2 टुकड़ों में तोड़करके छात्र के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है।

Teacher's Signature ....

Scanned with CamScanner

29 July 2021

Date ..../......./.......

Page No. ....

— जिन छोटे-2 टुकड़ों में विषय-वस्तु को तोड़ा जाता है उन टुकड़ों को पद / फ्रेम कहते है।

— दर्शन / विचार सुकरात ने दिया था।

— इसके जनक बी० एफ० स्किनर है।

Imp — अभिक्रमित अनुदेशन मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है—

(i) रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन :— → इसके जनक बी० एफ० स्किनर है। → इसने इसका अविष्कार 1954 में किया था। → यह सामान्य बुद्धि बालकों हेतु बनाया गया था।

→ इसमें कुल 95 पद / फ्रेम डाले जाते है।

(ii) शाखिय अभिक्रमित अनुदेशन :— → इसके जनक नार्मन क्राउडर है। → इसका अविष्कार 1960 में हुआ था।

→ यह प्रतिभाशाली बालकों हेतु बनाया गया है।

→ इसमें कुल 20 पद / फ्रेम होते है।

Que :- (a) अरेखिय / आन्तरिक अनुदेशन किसे कहते है ?

शाखिय अभिक्रमित अनुदेशन

(iii) अवरोही अभिक्रमित अनुदेशन :— इसके जनक थामस गिलबर्ट है। इसका अविष्कार 1962 में हुआ था। यह मंदबुद्धि बालकों हेतु बनाया गया था। इसमें कुल पद / फ्रेम अनिश्चित होते है लेकिन 20 से अधिक नहीं होते है।

→ अभिक्रमित अनुदेशन के गौण प्रकार :—

(1) स्वनिर्देशित अभिक्रमित अनुदेशन / संयुक्त अभिक्रमित — इसके अन्दर छात्रों को खुला छोड़ दिया जाता है कि वे खुद पद / फ्रेम तैयार करते है।

(2) कम्प्युटर आधारित अभिक्रमित अनुदेशन :— इसके जनक लॉरेन्स स्टालुरो व डेविस है। इसमें कम्प्युटर स्क्रिन के सामने होता है। इसमें किसी प्रश्न के च्यार उत्तर दिये जाते है सही

Teacher's Signature ....

Scanned with CamScanner

Date ...../...../.....

Page No. .....

उत्तर लगाने पर Green हो जाता है तथा गलत उत्तर होने पर Red हो जाता है।

गुण :-

(1) इसमें छात्र सक्रिय रहते हैं।
(2) छात्रों को सही अनुक्रिया का पुनर्बलन मिलता है।
(3) छात्रों को अपनी गलतियाँ एकदम मालूम हो जाता है।

दोष :-

(1) प्रोग्राम बनाने से लेकर प्रकाशित होने तक काफी धन खर्च होता है।
(2) Programm बनाने वाले के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

— आगमन विधि —

→ इस विधि के जनक अरस्तु है। इस विधि के अन्तर्गत प्रत्यक्ष उदाहरण, प्रयोग व तथ्यों के द्वारा नियमों का सत्यापन किया जाता है।

→ आगमन विधि कुछ सूत्रों का पालन करती है जो निम्न हैं —

(1) उदाहरण से नियम की ओर —
(2) विशिष्ट से सामान्य की ओर
(3) प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर
(4) स्थूल से सूक्ष्म की ओर
(5) मूर्त से अमूर्त की ओर
(6) ज्ञात से अज्ञात की ओर

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

Date ...../...../.....

Page No. .....

→ आगमन विधि के अन्तर्गत कुल (4) पद होते है।

(1) उदाहरण का प्रस्तुतीकरण।
(2) उदाहरण का निरीक्षण।
(3) नियम का सामान्यीकरण।
(4) नियम का सत्यापन।

गुण :-

(1) यह बालकेन्द्रित विधि है।
(2) यह मनोवैज्ञानिक विधि है।
(3) यह क्रियाशीलता के सिद्धान्त पर आधारित है।
(4) इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान स्थायी रहता है।
Imp (5) यह विधि अंकगणित शिक्षण में अत्यधिक उपयोगी है।

दोष :-

(1) इस विधि के अन्तर्गत शिक्षक को अधिक परिश्रम करना पड़ता है।
(2) यह लम्बी व थका देने वाली विधि है।
(3) सम्पूर्ण पाठ्यक्रम इस विधि से सम्पन्न नहीं हो सकता।

Imp
Ques :- NCF-2005 के अन्तर्गत आगमन विधि के दो सूत्रों का पालन होता है

(i) स्थूल से सूक्ष्म की ओर
(ii) ज्ञात से अज्ञात की ओर

→ निगमन विधि :- इस विधि के जनक अरस्तू थे। इस विधि के अन्तर्गत अध्यापक सर्वप्रथम नियम प्रस्तुत करता है जिसके पश्चात उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है। निगमन विधि कुछ सूत्रों का पालन करती है जो निम्न है —

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

Date ...../...../.....

Page No. .....

(i) नियम से उदाहरण की ओर।
(ii) अज्ञात से ज्ञात की ओर।
(iii) सामान्य से विशिष्ट की ओर।
(iv) सूक्ष्म से स्थूल की ओर।
(v) अमूर्त से मूर्त की ओर।
(vi) प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर।

CTET यह विधि बीजगणित और रेखागणित पर आधारित है—
यह विधि उच्च कक्षाओं हेतु विशिष्ट उपयोगी होता है।
आगमन विधि का पुष्टिकरण निगमन विधि की सहायता से होता है। अतः यह एक-दूसरे के पूरक विधियाँ मानी जाती है।

— यह प्राथमिक अर्थात् छोटी कक्षाओं हेतु उपयोगी नहीं है।
— यह अमनोवैज्ञानिक व शिक्षक केन्द्रित विधि है।
— निगमन विधि पर आधारित पुस्तकें स्वअध्याय हेतु सार्थक सिद्ध नहीं होती है।

Ques:- निगमन विधि आगमन विधि की मानी जाती है—
(i) पूरक ✓
(ii) विलोम
(iii) पर्याय
(iv) इनमें से कोई नहीं।

20th CTET Ques:- निगमन विधि इसमें से किस सूत्र का पालन नहीं करती है—
(i) नियम से उदाहरण।
(ii) सूक्ष्म से स्थूल।
(iii) ज्ञात से अज्ञात।
(iv) इनमें से कोई नहीं। ✓

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

Date ...../...../.....

Page No. .....

शिक्षण सूत्र :—

(1) सरल से कठिन की ओर।
(2) ज्ञात से अज्ञात की ओर।
(3) स्थूल से सूक्ष्म की ओर।
(4) पूर्ण से अंश की ओर।
(5) अनिश्चित से निश्चित की ओर।
(6) प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर।
(7) विशिष्ट से सामान्य की ओर।
(8) विश्लेषण से संश्लेषण की ओर।
(9) मनोवैज्ञानिक से तार्किक की ओर।
(10) अनुभव से युक्तियुक्त की ओर।
(11) प्रकृति का अनुसरण।

— प्रयोजना / योजना / प्रोजेक्ट विधि —

किसी भी कार्य को वैज्ञानिक ढंग से तथा क्रमबद्ध तरीके से पूर्ण करने की प्रक्रिया हेतु प्रोजेक्ट कहलाता है।
दर्शन — जॉन डी० वी०
जनक — विलियम किलपैट्रिक

प्रोजेक्ट शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1908 में रिचार्डस द्वारा America में हुआ।
प्रोजेक्ट को शिक्षा क्षेत्र में लाने का श्रेय किलपैट्रिक द्वारा 1918 में किया गया।

→ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 के अन्तर्गत विद्यालयी स्तर पर प्रोजेक्ट कार्य करवाने पर बल दिया गया।

Imp → प्रोजेक्ट विधि करके सीखने के सिद्धान्त पर आधारित है।

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

Date ..../......./.......

Page No. ....

→ प्रोजेक्ट विधि के अन्तर्गत कुल 6 पद आते है –

(1) परिस्थिति का निर्माण करना।

(2) योजना का चयन करना।

(3) योजना का कार्यक्रम बनाना।

(4) योजना को क्रियान्वित करना।

(5) योजना का मूल्यांकन करना।

(6) लेखा - जोखा निष्कर्ष निकालना।

— ह्यूरिस्टिक विधि / स्वंय ज्ञान विधि / अनुसंधान विधि / अन्वेषण विधि —

इसके प्रतिपादक H.E आर्मस्ट्रांग है। ह्यूरिस्टिक शब्द की उत्पत्ति ग्रीक / यूनानी भाषा के ह्यूरिकों / यूरिको शब्द से हुआ है जिसका अर्थ होता है। मैं ज्ञात करता हूँ = मैं मालूम करता हूँ।

ह्यूरिस्टिक विधि में प्रत्येक छात्र को एक निर्देशित मुद्रित पृष्ठ दिया जाता है और छात्र जिस समस्या का चयन किया रहता है उसका उपयोग उपर्युक्त निर्देशों के अनुसार करता है। यदि छात्र को प्रयोग के दौरान कोई समस्या आती है तो वह स्वतन्त्र रुप से शिक्षक से परामर्श ले सकता है।

— किण्डरगार्टन विधि —

Teacher's Signature ....

Scanned with CamScanner

(Micro teaching) → अवक्रोणियन शिक्षण है।

सूक्ष्म शिक्षण :— सूक्ष्म शिक्षण अध्यापक प्रशिक्षण की एक लघु रूप है जिसमें शिक्षण परिस्थितियों को सरल रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जिसके अन्तर्गत विशिष्ट कौशलों का अभ्यास किया जाता है।
सूक्ष्म शिक्षण की उत्पत्ति 1961 से मानी जाती है लेकिन इसका नामांकरण 1963 में किया गया। इसके जनक किथ एचीसन, एन० बुस, एलन व रेयॉन है। ये सभी व्यक्ति स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय (अमेरिका) में शोध कार्य कर रहे थे। एलन का शोध शिक्षण व्यवहार एवं शिक्षण क्रियाओं से सम्बन्धित था अतः D.W Allen को सूक्ष्म शिक्षण का जन्मदाता माना जाता है।

→ एलन के अनुसार — "सूक्ष्म शिक्षण कक्षा, आकार, पाठ के विषय-वस्तु, समय तथा शिक्षण की जटिलताओं को कम करने वाली संक्षिप्तिकृत कक्षा शिक्षण की तकनीकी है।

- इस सूक्ष्म शिक्षण के अन्तर्गत 5-10 विद्यार्थियों को लेकर 5-10 मिनट की सूक्ष्म पाठ योजना का निर्माण किया जाता है। ताकि शिक्षकों में कौशल विकास किया जा सके।
- 1968 में डॉ० बी० के० पासी व कृष्णा तिवारी को भारत भेजा गया। तब इन्होंने 1975 में NCERT के साथ मिलकर सूक्ष्म शिक्षण का प्रोजेक्ट तैयार कराया। तब B.K पासी ने बताया सूक्ष्म शिक्षण के 6 पद है तथा 36 मिनट के समय होना चाहिए।

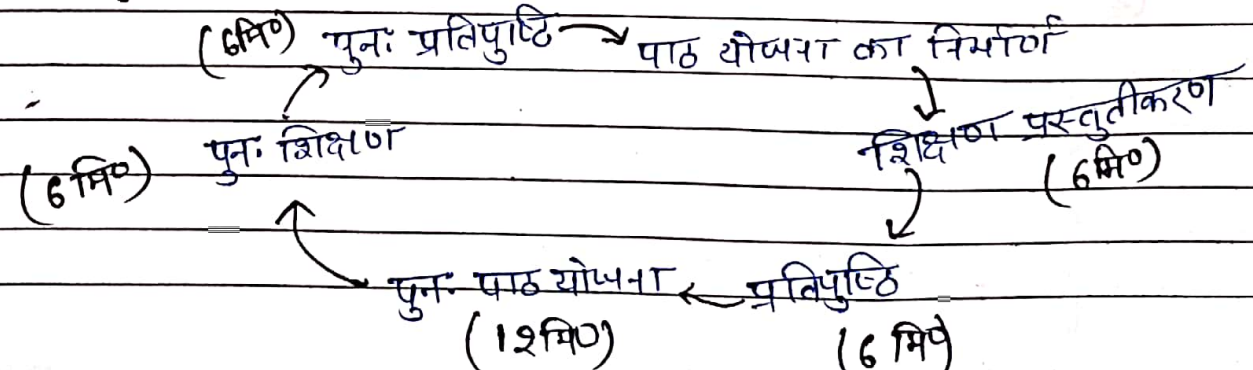

→ सूक्ष्म शिक्षण के 6 पद —

Scanned with CamScanner

Date ..../......./.......

Page No. ....

सूक्ष्म शिक्षण के 6 पद होते है। जो चक्रीय रूप में संचालित होते है।

Ques:- सूक्ष्म शिक्षण के भारतीय प्रतिमान में कुल कितना समय लगता है — 36 मिनट

→ पाठ योजना एक कालांश का समय आरक्षित नही होता है।
→ सर्वाधिक समय पुनः पाठ योजना हेतु आरक्षित रखा जाता है।

NCERT के भारतीय परिवेश के सन्दर्भ में निम्न प्रारुप प्रस्तुत किया है।

(1) छात्रों की संख्या 5–10
(2) सहपाठी छात्राध्यापक
(3) प्रवेशणकर्त्ता — शिक्षक प्रशिक्षण & सहपाठी छात्राध्यापक
(4) सूक्ष्म शिक्षण पाठ की अवधि — 6 मि०
(5) सूक्ष्म शिक्षण चक्र की अवधि — 36 मि०

गुण :—
(1) एक समय में एक ही कौशल पर कार्य होता है।
(2) लघु समूह होने के कारण प्रत्येक छात्र से अन्तःक्रिया सरलता से होता है।
(3) झिझक रखने वाले शिक्षकों हेतु उपयोगी है।
(4) शिक्षकों मे कौशल विकास होता है।

दोष :—
(1) वास्तविक शिक्षण परिस्थितियों का अभाव रहता है।
(2) मंद बुद्धि बालक इसका लाभ नहीं ले सकता।

Teacher's Signature ....

Scanned with CamScanner

Date ...../...../.....

Page No. .....

शैक्षिक सम्प्रेषण :— यह दो प्रकार का होता है —

(i) वैयक्तिक सम्प्रेषण
(ii) सामूहिक सम्प्रेषण

— हरबर्ट की पंचपदी विधि —

इसके प्रवर्तक जॉन फ्रैडरिक हरबर्ट है। इसने इसको 1830 ई० में अमेरिका में दिया था।

— इन्होंने दैनिक पाठ योजना के लिए चार सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था —

(1) स्पष्टता का सिद्धान्त
(2) सम्बन्ध का सिद्धान्त
(3) व्यवस्था " "
(4) प्रयोग " "

— जिलर ने स्पष्टता के सिद्धान्त पर दो पद बनाये —

(1) प्रस्तावना
(2) प्रस्तुतीकरण } → जिलर ने इन दो सिद्धान्त पर काम किया था।

(3) तुलना
(4) सामान्यीकरण
(5) प्रयोग } हरबर्ट स्पेन्सर ⇒ सम्बन्ध का सिद्धान्त
व्यवस्था " "
प्रयोग " "

— लेकिन चारों सिद्धान्त मान्य नहीं हुए। तब इन्हीं के तीनों शिष्यों ने चारों सिद्धान्तों का शुद्ध करने के लिए 5 पदों का निर्माण किया।

— हरबर्ट विधि को शुद्ध करने के लिए बेंजामिन ब्लूम ने एक पद और जोड़ा जिसका नाम मूल्यांकन था लेकिन यह भी मान्य नहीं हुआ।

— दैनिक पाठ-योजना के जनक जॉन फ्रैडरिक हरबर्ट है।

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

Date ...../...../.....

Page No. .....

— शिक्षण कौशल —

स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय & कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में क्रमशः 14 तथा 18 शिक्षण कौशलों की सूची तैयार की।

— एलन & रायन ने 14 शिक्षण कौशल बताये।

— भारत के इन्दौर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर वी० के० पॉसी ने 13 शिक्षण कौशलों की सूची तैयार की है।

(1) प्रस्तावना कौशल —

घटक :- प्रश्न पूर्व-ज्ञान से सम्बन्धित हो।
प्रश्न मूल पाठ से सम्बन्धित हो।
प्रश्नों में क्रमबद्धता तथा तारतम्यता हो।
प्रश्न छात्रों के रुचि एवं ज्ञान को बढ़ाने वाला हो।
प्रश्नों का विषय-वस्तु और उद्देश्य से सम्बन्ध हो
सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाये।

→ खोजपूर्ण कौशल / अनुशीलन कौशल :-

(1) संकेत देना।
(2) विस्तृत सूचना प्राप्ति।
(3) पुनः केन्द्रीकरण।
(4) पुनः प्रेषण।
(5) आलोचनात्मक सजकता।
(6) श्यामपट्ट लेखन कौशल :—

घटक :-
लेखन की स्पर्शता।
अक्षर स्पष्ट हो।
दो अक्षरों के बीच समुचित अन्तर हो।
अक्षरों की मोटाई में समानता हो।

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

Date ...../...../.....

Page No. .....

(3) श्यामपट्ट लेखन व कार्य में स्वच्छता।
- शब्द और वाक्य सीधी रेखा में हो।
दो लाइनों के बीच समुचित अन्तर हो।
मुख्य बिन्दु को चिह्नित किया जाये।

(4) श्यामपट्ट लेखन व कार्य की उपयोगिता —
(1) श्यामपट्ट कार्य स्पष्ट व संक्षिप्त हो।
(2) ध्यानाकर्षण हेतु रंगीन चॉर्ट का प्रयोग किया जाये।
(3) बनाये गये चित्र रेखा उपयुक्त हो।

(5) पुनर्बलन कौशल —
शाब्दिक धनात्मक पुनर्बलन।
अशाब्दिक " "।
शाब्दिक ऋणात्मक "।
अशाब्दिक " "।
सही उत्तरों का प्रयोग श्यामपट्ट पर किया गया हो।
छात्रों के सुझाव का समर्थन किया गया।

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner